माननीय राज्यपाल महोदय श्री राम नरेश यादव का बुंदेली समारोह में उद्वोधन
स्थान :- भोपाल, दिनांक :- एक जून, 2014 समय :-प्रातः 10:45 बजे

बुंदेलखंड के महानायक बुंदेल केसरी छत्रसाल की 365 वीं जयंती के अवसर पर आयोजित बुंदेली समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर समाणित होने वाले साहित्यकारों, विद्वानों और विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वाले विभूतियों को मेरी ओर से बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

सता और संघर्ष की घटनाओं से इतिहास भरा पड़ा है, परंतु स्वतंत्रता और सूत्र के लिए जीवन भर संघर्ष करने वाले विरल ही हुए हैं। मध्यकालीन भारत में विदेशी आतंकियों से सतत संघर्ष करने वालों में छत्रबन्ध शिवाजी, महाराणा प्रताप और बुंदेल केसरी छत्रसाल के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें जिन्हें उत्तराधिकार में सता नहीं वरन ‘शूषु’ और संघर्ष ही विरासत में मिले हों, ऐसे बुंदेल केसरी छत्रसाल ने वस्तुतः जीवनभर स्वतंत्रता और सूत्र के लिए ही सतत संघर्ष किया। शूषु से अपनी यात्रा प्रारंभ कर आकाश-सी ऊँचाई का स्पर्श किया।

छत्रसाल ने वस्तुत बुंदेलखंड राज्य की गरीबमाय स्थापना ही नहीं की थी, वरन् साहित्य सूत्र कर जीवंत काय भी रचे। छत्रसाल साहित्य के संस्कार के लिए ही उनके दरबार में विद्वान कवि, साहित्यकार और कई विद्वान सलाहकार पदस्थ थे।

वीरों और हीरों वाली माताके इस लड़ाई से कलम और करवाल को एक सी गरिमा प्रदान की थी। अपने प्राकृतिक पिता चंपतराय की मृत्यु के समय वे मात्र 12 वर्ष के थे। वनभूमी की गोद में जन्मे बच्चों की छाया में पले, बबराज से इस बीर का उदगम ही तोप, तलवार और रक्त प्रवाह के बीच हुआ।

छत्रसाल की तलवार जिन्हीं धारादार थीं कलम भी उतनी ही तीक्षण थीं। वे स्वतंत्र कवि तो थे ही कवियों का श्रेष्ठमान सम्मान भी करते थे। यही कारण है कि देश ही नहीं विश्व के बाहर ये बुंदेलकी समाज और बुंदेली साहित्य लोकप्रिय और समृद्ध है। बुंदेलखंड ही नहीं सम्पूर्ण भारत ऐसे महान व्यक्तित्व के प्रति पीढ़ी दर पीढ़ी कृतज्ञ रहेगा।

बुंदेली भाषा और साहित्य मीठी और आकर्षक है। बुंदेली कवियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन का अलख जगाया वहीं आधुनिक चेतना और ग्रामीण जीवन सहित समाज के हर पल बुंदेली कवियों के लिए अविभाज्य बन गए।
बुंदेली साहित्यकारों और कवियों की रचनाओं का ही परिणाम है कि 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन में बुंदेलखंड के वीरों ने बलिदान दिया।
बुंदेली लोक कला की समृद्धता और मोहकता को हमारे देश में सम्पन्न होने वाले विविध पर्व-त्योहार, व्रत, उत्सव आदि के अवसर पर देखा जा सकता है। बुंदेली लोक समृद्धि के वैविध्य-लोक गीत, लोक नृत्य, लोकोपनिश और लोक सम्प्रदाय में मनमोहकता के दर्शन आसानी से परिलक्षित होते हैं।
बुंदेलखंड मध्यप्रदेश का एक प्राचीन क्षेत्र होने बावजूद यहां के लोग पिछड़े और विकास से वंचित हैं। भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद बुंदेलखंड में जो एकता और समर्पण है उसके कारण यह क्षेत्र अपने आप में सबसे अनुठान बन पड़ता है। मैं इस अवसर पर युवाओं से कहना चाहता हूँ कि वे अपने समाज और देश के शूर वीरों, महानायकों और विद्वानों के जीवन दर्शन का अध्ययन कर उनके आदर्श और जीवन मूल्यों को आत्मसात करें तभी आप समाज और देश के विकास में सही दंग से अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकते हैं। जो व्यक्ति अपने देश और समाज का इतिहास और महान व्यक्तियों के जीवन और कृतित्व की जानकारी नहीं रखता है वह सफलता प्राप्त करने से पिछड़ जाता है। सामाजिक और स्वच्छ सेवी संस्थाओं का कर्तव्य है कि वे छत्तीसगढ़ की महानायक के बलिदान और संघर्ष की गाथाओं को युवाओं तक पहुंचाने के लिए सक्रिय भूमिका निभायें। मैं एक बार पुनः आप सबको बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।
जय हिंद।